CHAPTER - 8
कर चले हम फ़िदा

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न क:

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(1).
क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है ?

उत्तर 1:
यह गीत 1962 के भारत–चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। जब चीन ने तिब्बत की तरफ से भारत पर आक्रमण कर दिया था और भारतीय सेना ने उसका मुँहतोड़ जवाब दिया था ।

(2).
'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है ?

उत्तर 2:
इस पंक्ति हिमालय भारत के गौरव आन बान और शान का प्रतीक है । जिसको भारतीय सैनिकों ने अपना बलिदान देकर भी झुकने नहीं दिया ।

(3).
इस गीत में धरती को दुलहन क्यों कहा गया है ?

उत्तर 3:
जिस प्रकार एक दुल्हन का श्रृंगार किया जाता है उसको लाल साड़ी में सजाया जाता है ठीक उसी प्रकार भारतीय सैनिकों ने अपने खून से धरती को लाल रंग में रंग दिया था और उसे दुश्मनों से बचाकर अपने बलिदान से उसे दुल्हन की तरह सजा दिया था ।

(4).
गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि वे जीवन भर याद रह जाते हैं ?

उत्तर 4:
गीत हमेशा किसी पृष्ठभूमि पर हृदय की गहराइयों में उतरकर लिखे जाते हैं इसीलिए गीत जीवन भर याद रहते हैं ।

(5).
कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

उत्तर 5:
कवि ने 'साथियो' संबोधन उन सैनिको के लिए किया है जो युद्ध में बच गए हैं और शहीद होने वाले सैनिक उन पर भारत माता की रक्षा की जिम्मेदारी छोड़कर गए हैं ।

(6).

कवि ने इस कविता में किस काफिले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है ?

उत्तर 6:

कवि ने देश की रक्षा और बलिदान के लिए सैनिकों के समूह को काफिले के रूप में आगे बढ़ते रहने की बात कही है ।

(7).

इस गीत में 'सर पर कफन बाँधना' किस ओर संकेत करता है?

उत्तर 7:

इस गीत में 'सर पर कफन बाँधना' सैनिकों को देश की रक्षा के लिए जान देने की ओर संकेत करता है ।

(8).

इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर 8:

इस कविता में कवि ने सैनिकों को देश के प्रति जोश उत्साह और त्याग तथा उसके लिए प्राणों की आहुति तक देने को दर्शाया है । सैनिक को बचे सैनिकों से तथा आगे आने वाली पीढ़ी से यही आशा है कि वे भारत माता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे ।

प्रश्न (ख)

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए ।

(1).

साँस थमती गई, नब्ज जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उत्तर 1:

इन पक्तियों में कवि ने भारतीय सैनिकों की सराहना करते हुए कहा है कि वे भयंकर बर्फ के अन्दर भी दुश्मन से मोर्चा लेते रहे उन्होंने साँस के रुकने और खून के जमने की परवाह भी नहीं की देश रक्षा के जोश ने दुश्मन को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया ।

(2).

खींच दो अपने खूँ से जमीं पर लकीर
इस तरफ आने पाए न रावन कोई

उत्तर 2:

कवि के अनुंसार सैनिक एक दूसरे को संबोधित कर रहे हैं कि अपने खून से ऐसी लकीर खींच दो की फिर किसी रावण को को यह लक्ष्मण रेखा जलाकर भस्म कर देगी अर्थात फिर कोई दुश्मन इस ओर सिर उठाकर देख भी नहीं सकेगा ।

(3)
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों

उत्तर 3:

हमारे देश की इज्जत और आन से फिर कोई दुश्मन न खेल पाए राम की तरह उसे समझाओ और लक्ष्मण की तरह उसे डर भी दिखाओ ।